संपादकीय

हंस शोध सुधा की सफलता यही है कि इसमें देशभर से अच्छे और गंभीर शोधालेख आ रहे हैं। कला, विज्ञान और समाज के विभिन्न पक्षों को केंद्रित लेखों के प्रकाशन से पत्रिका की गरिमा बढ़ी है। हिंदी और अंग्रेजी भाषा में साहित्य, भाषा, विज्ञान और कला के विभिन्न आयामों को समेटता यह अंक अकादमिक जगत से जुड़े लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। इस अंक में शामिल लेखों की गम्भीरता और मौलिकता का पूरा ध्यान रखा गया है।

वास्तव में हंस शोध सुधा का आरंभ जिस उद्देश्य के लिए किया गया था, हम अंक दर अंक उसमें सफल हो रहे हैं। पत्रिका की बौद्धिक टीम ने पूरी जिम्मेदारी से लेखों की प्रमाणिकता और उसकी भाषा पर विशेष ध्यान देते हुए केवल उन्हीं को शामिल किया जो पत्रिका की नियमावली पर खरे उतरे हैं।

पत्रिका के प्रिंट कॉपी के साथ ही ऑनलाइन वेबसाइट पर भी कार्य किया जा चुका है। लेखक अपने लेखों को हंस शोध सुधा की वेबसाइट पर जाकर लेख पढ़ सकते हैं साथ ही किसी को भेज भी सकते हैं। कोरोना काल के कठिन समय में पत्रिका की टीम ने प्रत्येक अंक को समय से निकालने का प्रयास किया। तीन अंक सफलतापूर्वक वेबसाइट पर अपलोड किए जा चा चुके हैं,चौथे अंक की तैयारी चल रही है। जल्द ही महत्वपूर्ण विषयों पर संग्रहित लेखों के साथ नया अंक आपके सामने होगा। आप ऐसे ही अपना रचनात्मक सहयोग बनाए रखें।

धन्यवाद।

प्रोफ रमा
प्राचार्या
हंसराज महाविद्यालय